विज्ञान संचार में स्वास्थ्य सेवा प्रदाता की भूमिका

सचिन नरवडीया
वैज्ञानिक ''बी'', विज्ञान प्रसार,
सी–24 कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नयी दिल्ली–110016
sachin@vigyanprasar.gov.in

विज्ञान संचार का मतलब है, वह जन संचार जिसमें विज्ञान संबंधित विषयों को आसान और आम भाषा में उन लोगों तक पहुंचाना जो विषय–विशेषज्ञ न हों। वर्तमान समय में ये क्षेत्र एक व्यावसायिक क्षेत्र के रूप में उभर रहा है, जिसमें विज्ञान प्रदर्शनी, पत्रकारिता, दृश्य–श्रव्य कार्यक्रमों का निर्माण, नाटकों का मंचन अादि शामिल है। विज्ञान संचार का उद्देश्य किसी वैज्ञानिक खोज के लिए आधार बनाना, या लोगों में किसी विषय को लेकर दुविधा हो तो उसे दूर करना साथ–साथ योजना बनाने वालों को प्रेरित करना कि वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोच समझ तथा उसे ध्यान में रखकर सही योजनाओं को बनायें एवं कार्यान्वित करें। आज भारतीय समाज में गैर–वैज्ञानिक बातों को जल्दी बढ़ावा मिल जाता है, इसका प्रमुख कारण हम गैर–वैज्ञानिक सोच में, या बातों में ज्यादा रूचि रखते हैं, जिसे बढ़ाने में हमारे टेलीविजन, समाचार–पत्र बड़ी भूमिका निभाते हैं। इसलिए आज के समय की ये जरूरत है, कि हम हर बात को तर्कपूर्ण ढंग से समझे, जानें और परखें, फिर विश्वास करें। मूर्ति का दूध पीना या फिर फलों और सब्जियों में कोई विशेष अक्षर दिखाई देना जल्दी से जल्दी लोगों तक पहुंच जाते हैं, वहीं दूसरी तरफ विज्ञान की बातें लोगों तक पहुंचने में सयम लग जाता है। लोगों को सामान्य सी बात जैसे कि खाद्य पदार्थ की एक्सपायरी दिनांक की जांच करना नहीं पता रहता है, जिससे वे अपने स्वास्थ्य को खतरे में डालते हैं। इसी प्रकार स्वास्थ्य एक ऐसा पहलू है जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करता है फिर चाहे वह सामान्य सा लगने वाला सर्दी जुकाम हो या फिर कोई अन्य बीमारी, जिसके निदान और उपचार हेतु व्यक्ति को स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के संपर्क में आना होता है।

स्वास्थ्य सेवाओं में समस्याओं और बीमारियों को लेकर समाज में बहुत सारी गलत बातें और मान्यताएं व्याप्त हैं। इन सबके निवारण के लिए स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं पर दोहरी जिम्मेदारी बनती है, कि वे अपने व्यवसायिक कार्यों के निर्वहन के साथ–साथ विज्ञान के संचार में भी मदद करें और जन–जन में व्याप्त गलत धारणाओं को दूर करने में सहायक की भूमिका निभाएं। हमारे समाज में आज वैज्ञानिक साक्षरता की जरूरत है। जिसका मतलब ये नहीं कि विज्ञान की किताबों को पढ़ कर व रट कर वैज्ञानिक बनें बल्कि तथ्यों को वैज्ञानिक तरीके से समझें और फिर उनकर अमल करें। विज्ञान, विश्लेषण पर आधारित है, अतः हर बात का हम वैज्ञानिक विश्लेषण कर सकते हैं और समझ सकते हैं।

स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं में डॉक्टर, प्रयोगशाला तंत्रज्ञ, औषधी प्रदाता, नर्स आदि का समावेश है। हर किसी के लिए नियमावली है, जिसके अनुरूप वे अपने व्यवसायिक कार्यों का निर्वहन करते हैं। इन सबमें सबसे अग्रणी भूमिका डाक्टर की होती है, जिससे ये उम्मीद की जाती है कि वो रोगी या उसके रिश्तेदारों को सही जानकारी प्रदान करें तथा उनके प्रश्नों का समाधान करें। डाक्टरों को पारदर्शिता रखनी चाहिए, जिससे समाज में व्याप्त गैर–वैज्ञानिक धारणाओं को विराम मिल पायें। प्रयोगशाला तंत्रज्ञ वो है, जो प्रयोगशाला में प्रयोग विधि द्वारा ये बता सकता है कि बीमारियों का कारण क्या होगा तथा डॉक्टर को वह सही निदान में मदद करता है। उसकी थोड़ी सी भी गलती उपचार की दशा और दिशा को गलत और मोड़ सकती है। अतः उसका कार्य काफी महत्वपूर्ण है। प्रयोगशाला में अपने कार्य को सही ढंग से करने के साथ–साथ उसे जन संचार के माध्यम से समय–समय पर प्रयोग द्वारा किस प्रकार समस्या के बारे में पता चलेगा, उसमें कितना समय अपेक्षित है आदि, रोगी के रिश्तेदारों को पारदर्शिता के साथ बताना चाहिए।

इंसानों में बीमारियों को हम इस प्रकार से परिभाषित करते हैं कि सामान्य स्वास्थ्य से अलग की स्थिति होना। पिछले कुछ दशकों में बीमारियों के निदान के तरीकों में बहुत प्रगति पाई गयी है, जबकि उपचार के तरीकों में उतनी आधुनिकता का अभाव है।

ऐसे तत्व जो स्वास्थ्य सेवाओं में विज्ञान संचार करने में बाधा पहुंचाते हैं–

1. रूखा व्यवहार, मिलनसारिता का अभाव, भुलाने की आदत होना, थकावट रहना, कार्य करने के बीच में रूकावट आना, कार्य का समय बदलते रहना।
2. लिंग आधारित, सामाजिक एवम् सांस्कृतिक असमानता।
3. अधिकारियों का अन्य क्रमिकों से सम्पर्क न करना।
4. एक ही कर्मचारी को कई कार्यों में व्यस्त कर देना।
5. संस्था का उद्देश्य स्पष्ट न रहना।

स्वास्थ्य सेवाओं में विज्ञान संचार को बढ़ाने के उद्देश्य से किये जाने वाले कार्य–

स्वास्थ्य सेवाओं में विज्ञान संचार को बढ़ाने के उद्देश्य से तीन स्तरों पर साथ–साथ प्रयत्न किया जा सकता है, ताकि आशानुरूप स्वास्थ्य सेवाओं में विज्ञान संचार को बढ़ावा दिया जा सके।

1. व्यक्तिगत 2. सामूहिक 3. संस्थागत

1. व्यक्तिगत कारक

स्वास्थ्य सेवा सम्बन्धी प्रदाता के रूप में जरूरी है कि व्यक्तिगत तौर पर संचार कुशल हो जो कि लोगों को इस सेवा के सम्बन्ध में विस्तार पूर्वक बता सके, थकान और तनाव का स्तर उसमें नहीं होना चाहिए, उसे व्यवहार कुशल होना चाहिए, व्यक्तियों में दृढ़ता, सुनने में सक्रियता आदि स्वास्थ्य सेवा संचार में सुधार लाने के साथ एक साधन के रूप में विकसित कर सकते हैं।

2. सामूहिक कारक

कई कारक अक्सर रोगी की देखभाल के प्रबंधन और वितरण में शामिल होते हैं। स्वास्थ्य सेवा प्रदाता स्वाभाविक तौर पर अच्छे संचारक होते हैं, लेकिन उन्हें इस क्षेत्र में औपचारिक प्रशिक्षण और मूल्यांकन की जरूरत होती है। स्पष्ट आख्या है कि सामूहिक कार्यों को प्रभावशाली बनाया जाए, रोगी को जल्द से जल्द सेवाएं दी जाएं, कर्मचारियों का मनोबल समय–समय पर बेहतर किया जाए, नौकरी में संतुष्टि रहे, दक्षता में वृद्धि होती रहे और कर्मचारियों के बीच तनाव के स्तर को कम किया जाए तब स्वास्थ्य सेवाओं में विज्ञान संचार सही रूप में किया जा सकेगा।

3. संस्थागत

इंगित किया गया है कि संस्था की संस्कृति स्वास्थ्य सेवाओं में विज्ञान संचार को बढ़ावा देती है और संस्था के अन्दर एक प्रभावशाली संचार का आधार होती है। संचार के माध्यम हमेशा संस्था में खुले होने चाहिए। पारदर्शिता और आपसी विश्वास होना चाहिए। निर्णय लेने के क्षमता के साथ मजबूत नेतृत्व होना चाहिए। इन सब बातों पर ध्याने देते हुए हम समाज में स्वास्थ्य सेवाओं को और विकसित कर सकते हैं, और निरन्तर सुधार हेतु प्रयासरत हो सकते हैं।

संदर्भ

1. स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं में प्रभावशाली संचार को प्रोत्साहित करना तथा रोगी की सुरक्षा और गुणवत्ता, देखभाल, विक्टोरियन क्वालिटी कांउसिल, जुलाई 2010।
2. http://www.health.vic.gov.au/qualitycouncil